इंदिरा गांधी राष्ट्रीय अखंडता पुरस्कार वितरण समारोह में प्रधान मंत्री का भाषण

दिनांक 31 अक्तूबर, 2009

आज इस अति प्रतिष्ठित पुरस्कार समारोह में आपके बीच आकर मुझे बेहद खुशी हो रही है। राष्ट्रीय अखंडता के लिए इंदिरा गांधी पुरस्कार हर साल इंदिरा जी के शहीदी दिवस पर दिया जाता है। इंदिरा जी आधुनिक भारत के महानतम नेताओं में से एक थीं और यह पुरस्कार उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करने का एक छोटा सा प्रयास है।

राष्ट्र निर्माण और राष्ट्रीय अखंडता के लिए दिया गया इंदिरा जी का योगदान अद्वितीय है। राष्ट्रीय एकता और अखंडता तथा धर्मनिरपेक्षता के प्रति वे कितनी प्रतिबद्ध थीं इसे दोहराने की जरूरत नहीं है। उनकी शहादत के 25 साल बाद भी उनकी विरासत पहले की ही तरह मजबूत और स्थायी है और उनका दृष्टिकोण आज भी हमारा मार्गदर्शन करता है, हमें प्रेरणा देता है और आगे भी देता रहेगा। आज जबकि हम इंदिरा जी को श्रद्धांजलि अर्पित कर रहे हैं, हमें चाहिए कि हम उनके विचारों और मूल्यों को अपने जीवन में उतारने के लिए अपने आपको फिर से समर्पित करें। उनकी याद को सम्मानित करने का यही सबसे अच्छा तरीका होगा।

मैं इस वर्ष के पुरस्कार विजेता श्री बलराज पुरी को बधाई देता हूं। वे सही मायने में इस पुरस्कार के हकदार हैं। श्री बलराज पुरी का जीवन समाज और देश की निस्स्वार्थ सेवा तथा शांति, सद्भाव और साम्प्रदायिक सौहार्द के लिए समर्पित रहा है। वे क्षेत्रों और समुदायों के बीच की खाई को पाटने में अहम योगदान देते रहे हैं।

असाधारण व्यक्तित्व के धनी श्री बलराज पुरी एक ओजस्वी विद्वान हैं। वे स्वतंत्रता सेनानी, पत्रकार और मानवाधिकार कार्यकर्ता रहे हैं। जम्मू व कश्मीर राज्य के बारे में उनकी जानकारी की कोई सानी नहीं है। मैंने भी राज्य के बारे में उनसे बहुत कुछ सीखा है।

श्री बलराज पुरी ने जम्मू-कश्मीर पर तथा वहां की समस्याओं पर अत्यधिक प्रभावकारी पुस्तकें और लेख लिखे हैं। उनके लेखों में राज्य की समस्याओं के बारे में उनकी गहरी समझ और एक नई सोच की झलक देखने को मिलती है। इसमें कोई आश्चर्य नहीं है कि उन्होंने राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर शैक्षिक समुदाय से अत्यधिक सम्मान और प्रशंसा हासिल की है

और जिसके लिए उन्हें कई अवसरों पर सम्मानित भी किया गया है। उनकी पुस्तक – 'Kashmir: Towards Insurgency' उन सभी के लिए एक प्राथमिक पाठ्पुस्तक है जो राज्य में अशांति के कारणों के बारे में जानना चाहते हैं।

एक कार्यकर्ता के रूप में श्री बलराज पुरी के कई प्रयास ज्यादा उजागर नहीं हो पाए हैं और वे गुमनाम रह गए हैं। ये श्री बलराज पुरी ही थे जिन्होंने पंडित जवाहर लाल नेहरू और शेख अब्दुल्लाह के बीच और बाद में इंदिरा जी और शेख साहिब के बीच मतभेदों को दूर करने में मदद की थी। उनकी सबसे बड़ी पूंजी यह है कि उन्होंने जम्मू-कश्मीर के हर हिस्से में बड़ी संख्या में मित्र और साथी बनाए। इसलिए, यह आश्चर्य की बात नहीं है कि 1990 के दशक के गड़बड़ी के वर्षों के दौरान श्री बलराज पुरी ही उन कुछ लोगों में शामिल थे जिन्होंने हर तरफ से लोगों का विश्वास हासिल किया।

श्री पुरी ने बहुत छोटी उम्र से ही अपना कार्य प्रारंभ कर दिया था। वे 14 साल की उम्र में ही भारत छोड़ो आंदोलन में कूद पड़े थे। उन्होंने 1946 में जम्मू में छात्र आंदोलन आयोजित किए और बाद में बंटवारे के समय साम्प्रदायिक दंगे रोकने हेतु काम करने के लिए 1947 में पीस वालेंटियर कार्प्स की स्थापना की। श्री पुरी ने जम्मू-कश्मीर में शांति कायम करने के लिए 60 वर्ष से अधिक समय गुजारा है। लेकिन उनका कर्म-क्षेत्र केवल जम्मू-कश्मीर तक ही सीमित नहीं रहा है। पंजाब और उत्तर प्रदेश के कतिपय संवेदनशील क्षेत्रों में उन्होंने साम्प्रदायिक तनाव को दूर करने में मदद की और विवादों का बातचीत तथा अहिंसक तरीके से समाधान का मार्ग प्रशस्त किया।

आज जबकि हम इस असाधारण व्यक्ति को सम्मानित कर रहे हैं और अपने सबसे कद्दावर नेता इंदिरा जी की याद में श्रद्धांजलि दे रहे हैं, हम भारत के सहिष्णुता और धर्मनिरपेक्षता के सिद्धांत को उसी तरह याद रखेंगे। यही इंदिरा जी की विरासत है। हम शताब्दियों से एक ऐसे समाज में मिलजुलकर रह रहे हैं जिसमें अनेक धर्मों और संस्कृतियों का संगम होता है। एक ऐसा समाज जो हमेशा नई सोच और जीवन-शैली को अपने में समाहित करने के लिए तैयार रहता है। इस उदार दृष्टिकोण को संपोषित और सुदृढ़ करने की जरूरत है। यह हमारी जिम्मेदारी बनती है कि हम उन लोगों के खिलाफ आवाज उठाएं जो अपने हित साधन के लिए साम्प्रदायिकता के आधार पर समाज को बांटने का प्रयास करते हैं। इसमें हमें श्री पुरी की प्रतिबद्धता और कड़ी मेहनत से सीख लेने की जरूरत है। मुझे विश्वास है कि हम सभी इस अलग तरीके से राष्ट्रीय अखंडता के लिए अपना-अपना योगदान दे सकते हैं और हमें देना भी चाहिए।

मैं, श्री पुरी को एक बार पुन: बधाई देते हुए अपना भाषण समाप्त करना चाहूंगा। मेरी कामना है कि वे कई सालों तक स्वस्थ और खुशहाल रहें और इसी तरह देश की सेवा करते रहें। हमारे समाज को उन जैसे और भी पुरुषों और महिलाओं की जरूरत है। मेरी कामना है कि उनका यह योगदान आगे फलता-फूलता रहे।

....